इकाई 9 एकाधिकार का सिद्धांत

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 एकाधिकार के कारण

9.3 एकाधिकारी की माँग एवं सीमान्त आगम

9.4 एकाधिकार में कीमत एवं उत्पादन निर्णय

9.5 एकाधिकारी फर्म का दीर्घकालिक संतुलन

9.6 एकाधिकारी का व्यवहार : कुछ प्रश्न

- 9.6.1 क्या एकाधिकारी को सदा लाभ होता है?
- 9.6.2 क्या एकाधिकारी को कीमत बढ़ाना लाभप्रद होता है?
- 9.6.3 क्या एकाधिकारी की आपूर्तिवक्र सुनिश्चित होती है?
- 9.6.4 क्या एकाधिकारी अपने संयंत्र की उपयुक्ततम क्षमता का प्रयोग कर अभीष्ट स्तर पर उत्पादन करता है?
- 9.6.5 क्या गिरती हुई अथवा स्थिर सीमांत लागतों की दशा में भी एकाधिकार संभव है?
- 9.6.6 क्या एकाधिकार अकुशल प्रकार का बाजार है?

9.7 एकाधिकार एवं कीमत विभेदन

- 9.7.1 कीमत विभेदन का स्तर
- 9.7.2 कीमत विभेदन कब संभव होता है
- 9.7.3 कीमत विभेदन एवं संतुलन का निर्धारण

9.8 सार्वजनिक एकाधिकार : संतुलन कीमत एवं उत्पादन

- 9.8.1 सीमांत लागत के अनुसार कीमत निर्धारण
- 9.8.2 औसत लागत के अनुसार कीमत निर्धारण
- 9.8.3 औसत लागत से अधिक अनुपात द्वारा कीमत निर्धारण

9.9 सारांश

9.10 शब्दावली

9.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.12 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा दिशा-संकेत

9.0 उद्देश्य

पिछली इकाई में हमने चरम प्रकार के बाज़ार अर्थात् पूर्ण प्रतियोगिता का अध्ययन किया था। इस इकाई में हम एकाधिकार बाज़ार का अध्ययन करेंगे। जिसमें केवल एक ही उत्पादक होता है। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप कर सकेंगे :

- एकाधिकार की परिभाषा;
- एकाधिकार के पीछे कारणों की व्याख्या;
- एकाधिकारी अवस्था में माँग, लागतों, कीमत एवं उत्पादन के निर्धारण की व्याख्या;

- एकाधिकार के अंतर्गत कीमत विभेदन का विश्लेषण, और
- एक सार्वजनिक एकाधिकार की विशेषताएँ एवं कीमत निर्धारण विधियों की समीक्षा।

9.1 प्रस्तावना

सामान्यतः यदि किसी वस्तु की कोई स्थानापन्न वस्तु बाज़ार में नहीं हो और उसका केवल एक ही विक्रेता (उत्पादक) हो तो हम उस बाज़ार व्यवस्था को एकाधिकारी बाज़ार कहते हैं। इस एकमात्र उत्पादक पर किसी अन्य वस्तु की कीमत का उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह स्वयं भी किसी अन्य वस्तु की कीमत अथवा उत्पादन को प्रभावित नहीं कर पाता। इस परिभाषा में वस्तु के निकट स्थानापन्नों के नितान्त अभाव पर बहुत बल दिया गया है। अभिप्रायः है कि इस प्रकार की वस्तुएँ हैं ही नहीं जिनका इस वस्तु विशेष के स्थान पर प्रयोग किया जा सके। इसका कारण यही है कि आमतौर पर मनुष्य विभिन्न वस्तुओं/सेवाओं का कोई न कोई स्थानापन्न बना ही लेता हैं। अतः हम स्थानापन्नों उपलब्ध नहीं होने की बात करने की अपेक्षा उनका अस्तित्व नहीं होने की बात पर बल दे रहे हैं। उदाहरण के लिए यदि हम रेल द्वारा यात्रा करना चाहें तो भारतीय रेल हमारा एकमात्र विकल्प होगा। इस दृष्टि से भारतीय रेल एकाधिकारी उपक्रम हो जाता है। किन्तु यदि एक शहर से दूसरे शहर जाने की बात हो तो फिर रेल, सड़क, या फिर वायुयान तीनों ही साधन उपलब्ध हो सकते हैं। अतः भारतीय रेलों के स्थानापन्न परिवहन के माध्यम तो उपलब्ध हैं पर उन्हें निकट स्थानापन्न नहीं कहा जा सकता। इस प्रकार भारतीय रेल हमारी एकाधिकारी फर्म की परिभाषा को एक उपयुक्त उदाहरण हैं। सामान्यतः किसी एकाधिकारी बाज़ार में ये शर्तें पूरी होती दिखाई पड़ती है (क) बाज़ार में क्रेताओं की संख्या तो बहुत बड़ी होती है पर उत्पादक विक्रेता केवल एक। (ख) उस उत्पादक का उत्पादम समरूप हो सकता है, और भेदीय भी है किन्तु इस उत्पादक के उत्पादनों का अन्य कोई निकट स्थानापन्न नहीं होता अथवा कोई स्पर्धा नहीं होती। इसका यह भी अभिप्राय होगा कि अन्य उत्पादकों की बनाई वस्तुओं एवं एकाधिकारी के उत्पादन के बीच माँग की तिरछी लोच बहुत ही कम होती हैं। (ग) बाज़ार में प्रवेश कर पाने की स्वतंत्रता नहीं होगी। कहीं कच्चे माल पर नियंत्रण जैसे प्राकृतिक कारण, कहीं कानूनी एवं संस्थागत कारक–जैसे कि पैटेण्ट अधिकार तो कहीं विशाल पैमाने पर उत्पादन की उपयुक्तता-दक्षता आदि के तकनीकी कारक इस प्रवेश स्वतंत्रता के मार्ग के बाधक हो जाते हैं।

यदि उपर्युक्त तीनों शर्तें एक साथ पूरी हो तो बाज़ार का स्वरूप एकाधिकारी कहलाता है। पूर्ण प्रतियोगिता की भाँति ही एकाधिकार भी एक काल्पनिक-सी व्यवस्था होती है इसके लिए सभी आवश्यक शर्तें शायद ही कहीं पूरी हो जाती हों।

9.2 एकाधिकार के कारण

एकाधिकार को बनाए रखने के लिए प्रतियोगियों को उद्योग से बाहर रखने का कोई न कोई तरीका होना ही चाहिए। ऐसे अनेक अवरोध होते हैं जैसे : (i) पैटेण्ट तथा सरकारी लाइसेन्स व्यवस्था; (ii) कच्चे माल के स्रोतों पर नियंत्रण; (iii) वस्तु के किसी ब्रांड आदि का बाज़ार में जमा होना; (iv) प्रतियोगियों को बाज़ार से बाहर रखने की दृष्टि से अपनाई गई कीमत निर्धारण नीति; (v) उद्योगों में प्रवेश के लिए बहुत पूँजी की आवश्यकता पड़ना; और (vi) बाज़ार का आकार। इन्हीं कारकों को हम तीन श्रेणियों में बाँट सकते हैं : (क) प्राकृतिक; (ख) कानूनी एवं संस्थागत; एवं (ग) तकनीकी। प्राकृतिक कारणों में से एकाधिकारी की किसी उत्पादन के लिए कच्चे माल के प्राकृतिक

स्रोतों पर नियंत्रण रखने की क्षमता प्रमुख होती है। वैसे आधुनिक काल में वैधानिक एवं संस्थागत तथा तकनीकी कारण एकाधिकारिता को बढ़ाने में अधिक योगदान दे रहे हैं। प्रवेश पर कानूनी प्रतिबंध तो स्पष्टतः ही वर्तमान उत्पादक को बाज़ार पर एकाधिकार प्रदान कर देता है। सरकार द्वारा लाइसेंस आदि के कानूनी अधिकार प्रदान करना भी अन्य उत्पादकों का इस उद्योग विशेष में प्रवेश रोक सकता है। शौधकर्ता का उत्पादन की तकनीक पर पैटेण्ट अधिकार भी कानूनी कारकों का ही एक उदाहरण है।

किसी बाज़ार में किसी एक ही व्यक्ति को विपणनाधिकार **(exclusive franchise)** किया जाना भी एकाधिकार की रचना में सहायक हो जाता है। तकनीकी अवरोधों में तो सबसे महत्त्वपूर्ण बड़े पैमाने पर उत्पादन करने की बाध्यता होता है यदि उत्पादक ऐसा नहीं करता, तो वह बड़े पैमाने की मितव्ययताओं के माध्यम से न्यून लागत का लाभ नहीं उठा पाता। अतः यदि कोई नई फर्म बाज़ार में आना चाहती है तो उसे वर्तमान उत्पादक से कहीं अधिक कुशलतापूर्वक (कम लागत) पर उत्पादन कर पाने योग्य विशाल संयंत्र लगाना पड़ेगा। उस पर निवेश लागत भी बहुत भारी होगी किन्तु साथ ही यदि बाज़ार का आकार अपेक्षाकृत सीमित हो तो नई फर्म इस प्रकार का निर्णय ले पाने में बहुत ही हिचकिचाएगी। अतः वर्तमान उत्पादक का एकाधिकार बना रहता है। उन उद्योगों में, जहाँ बहुत विशाल क्षेत्र में पाइप लाइन या तारों का जाल बिछाना अनिवार्य हो, एकाधिकार आवश्यक बन जाता है। ऐसे उद्योगों के उदाहरण जल आपूर्ति, विद्युत आपूर्ति, तार और दूरभाष आदि हैं।

9.3 एकाधिकारी की माँग एवं सीमांत आगत

आपने इकाई 8 में देखा था कि पूर्ण प्रतियोगिता में एक फर्म की कीमत तथा सीमांत आगम एक समान होते हैं क्योंकि प्रत्येक फर्म बाज़ार में निर्धारित कीमत को यथास्वरूप स्वीकार कर लेती है।

चित्र 9.1

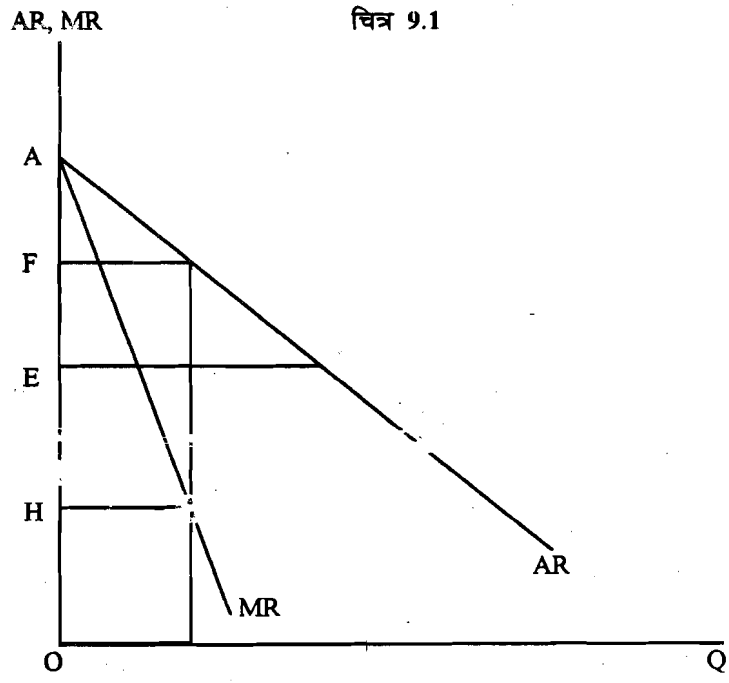

चित्र 9.1 में औसत आगम-AR तथा सीमांत आगम-MR का संबंध दर्शाया गया है। जहाँ माँग-वक्र सरल रेखा FD द्वारा दिखाई जा रही है। कीमत OF से कम होकर OE रह जाने पर सीमांत आगत OF से घटकर OH रह जाती है और FE = EH। किन्तु जब FE = EH हो अतः FH = 2FE, अर्थात् सीमांत आगम में औसत आगम (AR = P) से दुगुनी तेज़ी से परिवर्तन होता है।

किन्तु एकाधिकारी का माँग-वक्र तो उद्योग माँग-वक्र ही होता है। यहाँ केवल एक ही उत्पादक होने के कारण उत्पादक एवं उद्योग में कोई अन्तर नहीं रहता। गिफिन पदार्थों के अपवाद को छोड़कर बाज़ार माँग-वक्र तो सामान्यतः दाहिनी ओर ढलवाँ ही होते हैं। हम पहले ही इकाइयों 4 एवं 5 में माँग, सीमांत आगम तथा माँग की लोच का वर्णन कर चुके हैं। आइए एकाधिकार के संदर्भ में उन्हीं संकल्पनाओं पर पुनः विचार कर कुछ और उपयोगी जानकारी प्राप्त करें।

जब माँग-वक्र दाहिनी ओर ढलवाँ होता है तो सीमांत आगम-वक्र इससे नीचे रहता है। दूसरे शब्दों में सीमांत आगम में औसत आगम से अधिक तेज़ी से गिरावट आती है। यदि माँग-वक्र सरल रेखीय हो तो सीमांत उससे दुगुने ढाल वाली सरल रेखा ही होती है।

आइए एक बार फिर से औसत एवं सीमांत आगम तथा माँग की लोच (e) के संबंध पर चर्चा करें। MR = AR-AR/e = AR(1-1/e) यदि e>1 तो कीमत कम होने पर कुल आगम में वृद्धि होती है। इसका कारण यही है कि सीमांत आगम कुल आगम में हुई वृद्धि ही है। दूसरी ओर यदि e<1 तो कीमत कम होने पर कुल आगम में गिरावट आएगी, यहाँ सीमांत आगम अपने ऋणात्मक हो जाएगी। यदि e=1 तो कुल आगम अपरिवर्तित रहती है अतः सीमांत आगम शून्य होनी चाहिए। अतः हम कह सकते हैं कि यदि MR>0 तो e>1, यदि MR=0 तो e=1, तथा यदि MR<0 तो e=1। यही बात चित्र 9.2 द्वारा दिखाई गई हैं।

चित्र 9.2

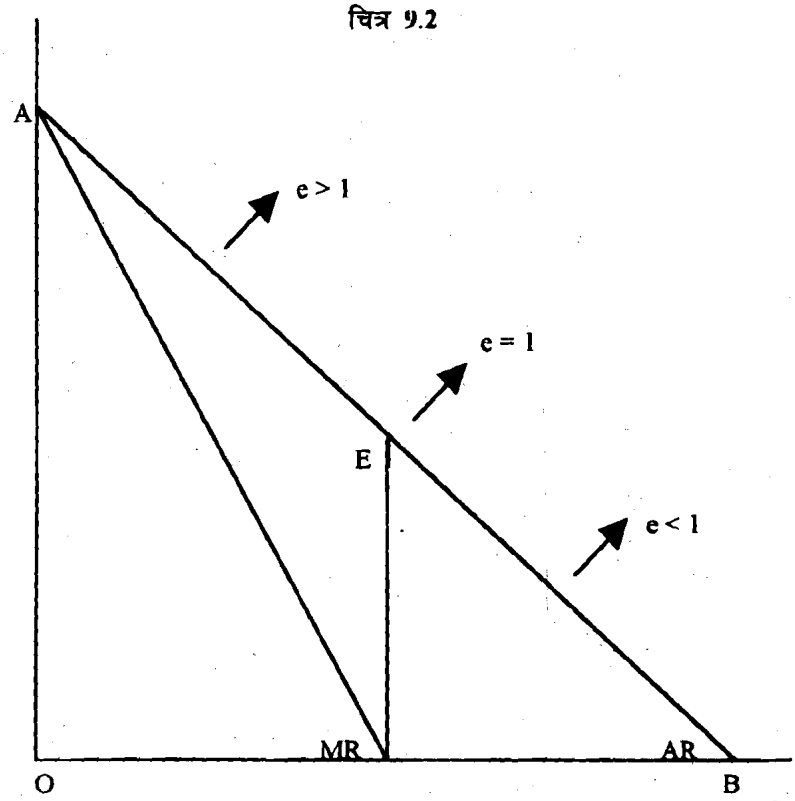

चित्र 9.2 हम जानते ही हैं कि माँग-वक्र के किसी बिन्दु E पर माँग की लोच निचले हिस्से BE तथा ऊपर वाले हिस्से EA के अनुपात द्वारा ज्ञात होती है। यहाँ E पर e=1, E से B तक के बिन्दुओं पर e<1, तथा E से A तक के सभी बिन्दुओं पर e>1 होगी।

आइए अब उपर्युक्त सूत्र, MR=AR(1-1/2) का प्रयोग करके देखें। मान लो कि e=2। अतः MR=AR-AR/2। अतः MR>0। यदि e=1, तो फिर MR=AR-AR/1=0। दूसरी और यदि e=1/2, तो फिर MR=AR-AR/1/2 = AR-2AR = -AR अर्थात् MR<0।

9.4 एकाधिकार में कीमत एवं उत्पादन निर्णय

एकाधिकार में कीमत एवं उत्पादन संबंधी निर्णय पूर्ण प्रतियोगी फर्म की भाँति ही होते हैं। यहाँ एकाधिकारी दीर्घकाल में अधिकतम लाभ कमाने को उत्सुक होता है। अल्पकाल में वह कुल आगम एवं कुल लागत के अन्तर को अधिकतम बनाए रखना चाहता है– बस उसकी परिवर्ती लागतें पूरी होती रहें।

यह भी ध्यान देने की बात है कि एकाधिकारी ऐसे किसी बिन्दु पर उत्पादन नहीं करना चाहेगा जहाँ उसकी माँग लोच इकाई से कम रह जाती हो। चित्र 9.2 के संदर्भ में हुई चर्चा से यह तो सहज ही देखा जा सकता है $e<1$ होने पर $MR<0$ हो जाता है। अतः उत्पादन कम करने पर कुल आगम बढ़ेगा। दूसरी ओर, सीमांत लागत सदैव धनात्मक ही रहती है अतः उत्पादन कम करने पर कुल लागत में कमी आएगी। इस प्रकार $e<1$ बिन्दु पर उत्पादन घटाने (अथवा कीमत बढ़ाने) पर लाभ में वृद्धि होगी। अतः एकाधिकारी किसी ऐसे बिन्दु पर संतुलन नहीं पा सकता जहाँ माँग की लोच एक इकाई से कम हो।

दूसरे शब्दों में एकाधिकारी का संतुलन वहीं हो पाएगा जहाँ इसकी माँग की लोच एक से अधिक हो। लाभ हो अधिकतम करने के लिए प्रयत्नशील एकाधिकारी ऐसी किसी कीमत पर अपना उत्पादन नहीं बेच सकता जहाँ माँग लोचहीन हो। वह माँग-वक्र के लोचशील भाग में ही कार्य कर पाता है। अधिकतम लाभ कमाने की मान्यता के आधार पर एकाधिकारी का अल्पकालिक संतुलन उसी लागत एवं आगम-वक्रों द्वारा ज्ञात किया जा सकता है। पिछली इकाई में चर्चित संतुलन की सामान्य शर्त यहाँ भी लागू होती है। अतः एकाधिकारी का संतुलन वहीं होगा। जहाँ (क) फर्म की **MR** उसी **MC** के समान हो, तथा (ख) **MC** वक्र **MR** के नीचे की ओर से काट रही हो। अल्पकाल में सीमांत लागत-वक्र ही (संयंत्र के आकार आदि के निश्चित रहने पर) उत्पादन एवं लागतों से संबंध दर्शाता है।

चित्र 9.3

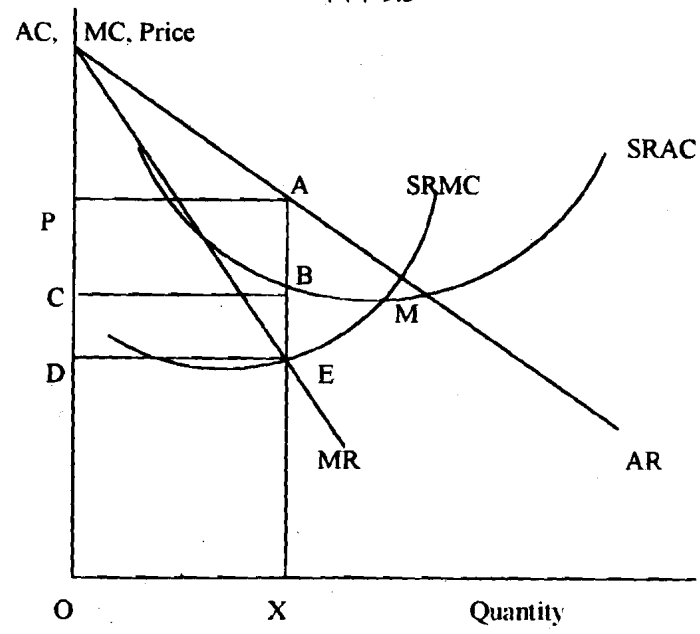

चित्र 9.3 : यहाँ हम एकाधिकारी के संतुलन का निर्धारण कर रहे हैं E बिन्दु पर उठती हुई SRMC गिरती हुई MR को नीचे से काट रही है। अतः फर्म MR उत्पादन करेगी। वह उस उत्पादन को उस अधिकतम कीमत OP पर बेचेगी जो उपभोक्ता चुकाने को तैयार हो सकते हैं।

चित्र 9.3 में माँग-वक्र AR, सीमांत आगम-MR, अल्पकालिक औसत लागत SRAC तथा अल्पकालिक सीमांत लागत SRMC द्वारा दिखाई गई हैं। बिन्दु E पर संतुलन की दोनों शर्तें, अर्थात् MR=SRMC तथा सीमांत लागत सीमांत आगम को नीचे से काटती हो, पूरी हो रही है। अतः यही उत्पादक का संतुलन बिन्दु होगा। यहाँ उत्पादक OX मात्रा का उत्पादन करेगा। इस उत्पादन को बाज़ार में OP कीमत पर बेचा जाएगा। ध्यान दें कि यह कीमत SRMC से अधिक हैं यही नहीं, OP>SRAC। अतः फर्म निश्चित रूप से मुनाफा कमा रही है। यदि उत्पादन बढ़ाने का प्रयास किया जाए तो लागत की वृद्धि आगम में वृद्धि से अधिक होगी। उससे लाभ में कमी आएगी। यदि फर्म OX से कम उत्पादन कर रही हो तो उसे उत्पादन वृद्धि करना लाभप्रद होगा क्योंकि वहाँ MR>MC अतः उत्पादन वृद्धि से लागत में हुई वृद्धि आगत की वृद्धि से कम रहेगी। अतः हम कह सकते हैं कि फर्म OX उत्पादन PABC क्षेत्र द्वारा निर्दिष्ट अधिकतम लाभ कमा रही है।

9.5 एकाधिकारी फर्म का दीर्घकालिक संतुलन

दीर्घकाल में एकाधिकारी इस बात पर भी विचार कर सकता है कि संयंत्र के आकार में परिवर्तन से वह और लाभ कमा सकता है या नहीं। अतः उसकी दीर्घकालिक सीमांत लागत-वक्र में संयंत्र के आकार सहित सभी कारकों के परिवर्तन के कारण कुल लागत में हुए परिवर्तन शामिल रहेंगे। इसी दीर्घकालिक सीमांत लागत (LRMC) एवं सीमांत आगत की समानता बिन्दु जहाँ LRMC इसी MR को नीचे से काटती हो पर ही उत्पादन का संतुलन उत्पादन संतुलन निर्धारित होगा। इस प्रकार के संतुलन में अल्पकालिक संतुलन भी निहित रहता है। फर्म यहाँ इस प्रकार के संयंत्र का चयन करती है कि AR>AC हो। यदि AR=AC तो फर्म तो सामान्य लाभ मिलता है। यदि AR>AC तो उसे अतिरिक्त लाभ मिल सकता है। दीर्घकाल में AR<AC जैसी अवस्था पैदा नहीं हो सकती। एक विशुद्ध एकाधिकार में तो किसी भी संभावित प्रतियोगी का बाज़ार में प्रवेश नहीं हो पाता। अतः ये आर्थिक अथवा अतिरिक्त लाभ बने ही रहते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) एकाधिकार से आप क्या समझते हैं? एकाधिकार के लिए किन शर्तों का पूरा होना अनिवार्य होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) वे कौन-सी शर्तें हैं जिनसे एकाधिकार की संभावना हो सकती हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) एकाधिकारी के उत्पादन की माँग-वक्र दाहिनी ओर ढलवाँ होती है, व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

4) एकाधिकारी फर्म के औसत एवं सीमांत आगम-वक्रों के संबंध की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

5) एक रेखीय माँग-वक्र और उससे संबद्ध सीमांत आगम-वक्र बनाए। औसत, सीमांत आगम तथा माँग की लोच का संबंध बताने वाले सूत्र बताएँ। यह भी बताएँ कि ये माँग एवं सीमांत आगम-वक्र किस प्रकार इस सूत्र के निरूपित संबंध का निर्धारण करते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

6) कोई एकाधिकारी मनमाने ढंग से उत्पादन एवं कीमत दोनों का ठीक निर्धारण नहीं कर सकता। व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

7) साधारण एकाधिकार में कीमत निर्धारण किस प्रकार होता है?

.....

.....

.....

.....

8) दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म किस प्रकार कीमत एवं उत्पादन निर्धारित करती है?

.....

.....

.....

.....

9.6 एकाधिकारी का व्यवहार : कुछ प्रश्न

एकाधिकारी फर्म के व्यवहार को लेकर आपके मन में कुछ प्रश्न उठ सकते हैं जैसे : (क) क्या एकाधिकारी सदा ही लाभ कमाता है? (ख) क्या एकाधिकारी को कीमत बढ़ाना लाभप्रद होता है? (ग) क्या एकाधिकारी की आपूर्ति-वक्र सुनिश्चित होती है? (घ) उद्योग में एकमात्र फर्म होने के नाते क्या एकाधिकारी अपने संयंत्र का अनुकूलतम प्रयोग कर इष्टतम स्तर पर उत्पादन करता है? (च) क्या गिरती हुई अथवा स्थिर सीमांत लागत के साथ एकाधिकार का निर्वाह हो सकता है? तथा (छ) क्या एकाधिकार व्यवस्था एक अकुशल बाज़ार प्रणाली होती है? आइए इन प्रश्नों पर बारी-बारी से विचार करें।

9.6.1 क्या एकाधिकारी को सदा लाभ होता है?

वास्तव में ऐसा मानने का कोई निश्चित आधार नहीं है। यदि माँग-वक्र का स्तर लागतों की अपेक्षा काफी नीचा हो तो एकाधिकारी को लाभ पाने के स्थान पर हानि उठाने की संभावना भी हो सकती है।

चित्र 9.4

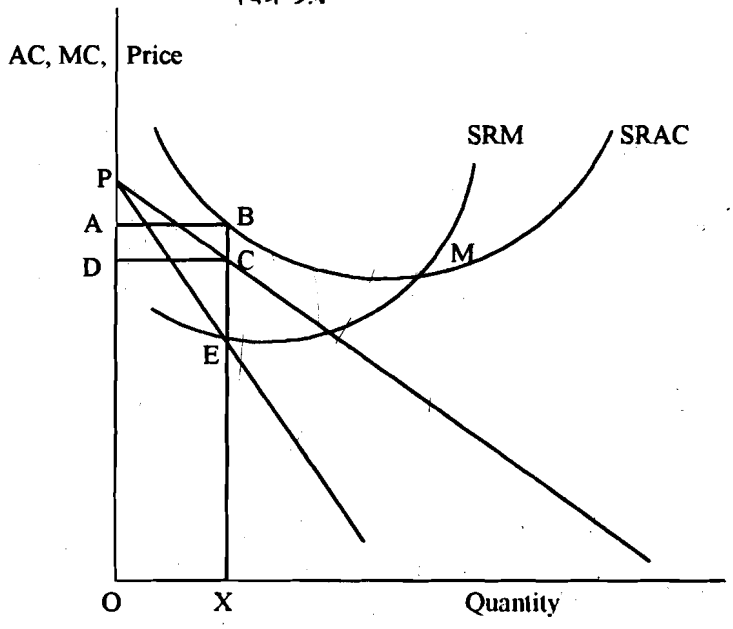

चित्र 9.4 एक ऐसी अवस्था दिखा रहा है जहाँ एकाधिक्रारी को अल्पकाल में कुछ हानि सहन करनी पड़ सकती है। जब तक उसकी औसत आगम (AR) उसकी परिवर्ती औसत लागत से अधिक रहे, वह उत्पादन करते रह सकता है। किन्तु यदि माँग-वक्र और नीचे खिसक जाए तो फिर फर्म को व्यवसाय बंद करना पड़ सकता है। यदि दीर्घकाल में फर्म अपने संयंत्र आदि में परिवर्तन कर बाज़ार की माँग के अनुरूप अपने आप को ढाल पाती है तो ठीक है, अन्यथा LRAC वक्र के AR से ऊपर बने रहने की दशा में उसे व्यवसाय बंद करना ही श्रेयस्कर रहेगा।

चित्र 9.4 को ध्यान से देखें। फर्म का SRAC का AR से ऊँचा है। अत: फ़र्म को भरे हुए क्षेत्र के समान हानि सहन करनी पड़ती है। दीर्घकाल तक ऐसी दशा बनी रहने पर तो फर्म को या तो अपने संयंत्र का आकार बदलना होगा अथवा व्यवसाय ही छोड़ना पड़ जाएगा। हाँ, अल्पकाल में वह जब तक व्यवसाय में बना रह सकता है जब तक कि उसकी परिवर्तनीय लागत पूरी होती रहती है। यदि संतुलन कीमत परिवर्ती लागतों से भी कम रह जाए तो फिर व्यवसाय बंद करने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रहता। ध्यान दें पूर्ण प्रतियोगिता में भी ऐसी दशा में फर्म को बाज़ार छोड़ना पड़ जाता था।

9.6.2 क्या एकाधिकारी को कीमत बढ़ाना लाभप्रद होता है?

यदि एकाधिकारी उस क्षेत्र में उत्पादन कर रहा हो कि $e<1$ तो निश्चित रूप से कीमत वृद्धि (और उत्पादन में कटौती) लाभप्रद होगी। कारण सीधा सा है : $e<1$ का अर्थ है $MR<0$ (अतः कीमत बढ़ने से जहाँ कुल आगम में वृद्धि होगी वहीं कुल लागत में कमी आएगी। क्योंकि सीमांत लागत तो वृद्धिमान होती हैं)।

अतः जब तक $e<1$, कीमत वृद्धि से एकाधिकारी को लाभ होगा। किन्तु यदि वह माँग-वक्र के लोचशील हिस्से में कार्य कर रहा हो तो $MR<0$ होगा। यहाँ कीमत वृद्धि से केवल कुल लागत ही नहीं कुल आगम में भी कमी होगी। अतः उसी दशा में कीमत वृद्धि लाभप्रद हो पाएगी जबकि कुल लागत की गिरावट कुल आगम की गिरावट से अधिक हो। अन्यथा फर्म को लाभ बढ़ाने के लिए कीमतें कम करना उचित प्रतीत होगा।

9.6.3 क्या एकाधिकारी की आपूर्तिवक्र सुनिश्चित होती है?

एकाधिकारी द्वारा ग्राहक से ली गई कीमत उसकी सीमांत लागत के समान नहीं होती। इसी कारण आपूर्ति-वक्र का आकार सुनिश्चित नहीं रह पाता। यदि MC का स्तर ज्ञात हो (तो भी) माँग की कीमत लोच के आधार पर उत्पादक एक ही कीमत पर अलग-अलग मात्राएँ बेचने को तत्पर हो सकता है (पृथक्-पृथक् लोचशीलतापूर्ण संभव माँग-वक्रों के आधार पर तो वह एक ही मात्रा के लिए अलग-अलग कीमत वसूलने में भी सफल हो सकता है)। यही नहीं, कभी-कभी तो एक ही कीमत पर वह अलग-अलग लोभशील माँगों वाले बाज़ारों में अलग-अलग मात्रा बेचने का प्रयास भी कर सकता है। अतः कीमत एवं मात्रा का संबंध सुनिश्चित नहीं होगा–अर्थात् आपूर्ति-वक्र सुनिश्चित नहीं होगा।

9.6.4 क्या एकाधिकारी अपने संयंत्र की अनुकूलतम क्षमता का प्रयोग कर इष्टतम स्तर पर उत्पादन करता है?

एकाधिकारी का अनुकूलतम संयंत्र प्रयोग एवं इष्टतम उत्पादन कर पाना वस्तुतः उसकी लागत-वक्रों की तुलना में माँग-वक्र की स्थिति पर निर्भर करता है। एक बार लागत-वक्र की स्थिति निर्धारित हो जाने पर यदि माँग-वक्र ऊपर होगी तो क्षमता का अधिक प्रयोग संभव हो जाएगा– किन्तु माँग-वक्र के नीचे खिसकने के कारण क्षमता का अल्प प्रयोग हो पाएगा। किसी अन्य प्रतियोगी के बाज़ार प्रवेश की संभावना नहीं होने के कारण भी एकाधिकारी अनुकूलतम स्तर पर संयंत्र का प्रयोग करने को खास इच्छुक नहीं होता। उसके लिए दीर्घकालिक औसत लागत-वक्र (LAC) के निम्नतम बिन्दु पर उत्पादन करना अनिवार्य नहीं होता वस्तुतः संयंत्र का आकार एवं प्रयोग का स्तर, दोनों ही बाज़ार में माँग की दशाओं पर निर्भर करते हैं। बाज़ार की दशाओं के आधार पर वह अपने न्यूनतम लागत बिन्दु पर उत्पादन कर सकता है, गिरती हुई औसत लागत की दशा में कार्य कर सकता है तथा आवश्यक होने पर बढ़ती हुई औसत लागत की दशा में भी काम करते रह सकता है।

बाज़ार में प्रवेश अवरोधों के कारण ही एकाधिकार में वे बाज़ार शक्तियाँ कार्य नहीं कर पाती जिनके कारण कोई उत्पादक दीर्घकाल में पूर्ण क्षमता उत्पादन करने को बाध्य होता है। वह पूर्ण क्षमता, उससे कम यहाँ तक कि अधिक भी उत्पादन कर सकता है सब कुछ बाज़ार के आकार– अर्थात् बाज़ार में माँग की दशाओं पर निर्भर है।

9.6.5 क्या गिरती हुई अथवा स्थिर सीमांत लागतों की दशा में भी एकाधिकार संभव है?

हम जानते हैं कि गिरती हुई अथवा स्थिर सीमांत लागतों की दशा में पूर्ण प्रतियोगिता तो संभव नहीं होती। उसमें तो संतुलन बिन्दु पर सीमांत लागत का वृद्धिमान होना अनिवार्य होता है। किन्तु अपूर्ण प्रतियोगिता में यह आवश्यक नहीं रहता। एकाधिकारी की सीमांत लागत वृद्धिमान, स्थिर या फिर ह्रासमान भी हो सकती है– बस संतुलन अवस्था में उसका गिरती हुई आगम के समान होना तथा सीमांत आगम को नीचे को काटना जरूरी है। ऐसी ही एक संभावना हम चित्र 9.5 में दिखा रहे हैं। यहाँ हमने एकाधिकारी की सीमांत लागत स्थिर (तथा इसीलिए) और सीमांत लागत के समान आती हैं।

चित्र 9.5

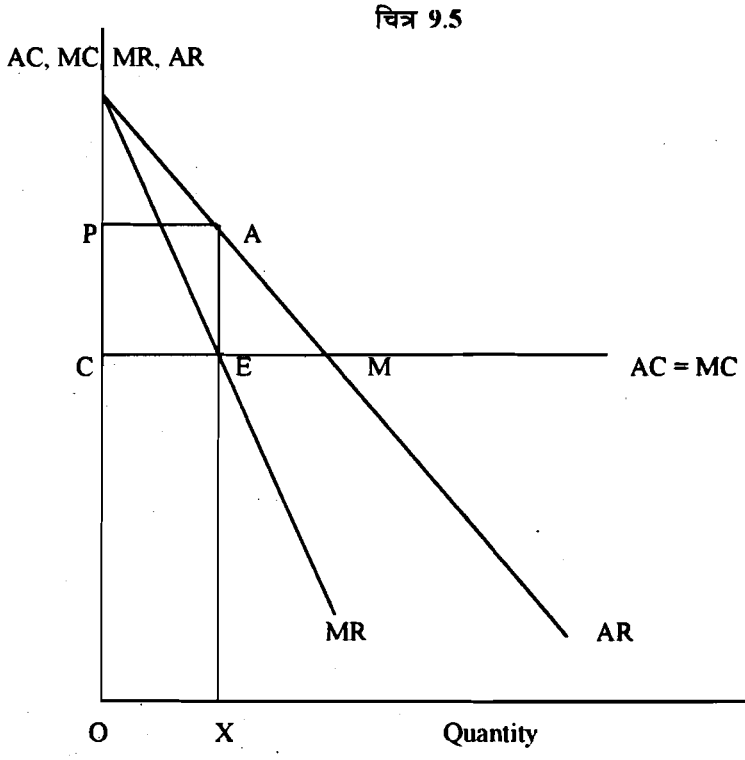

चित्र 9.5 एक विशेष अवस्था का चित्रण कर रहा है। यहाँ फर्म की MC=AC= स्थिर रहती हैं। फिर भी उसका संतुलन बिन्दु E पर होगा क्योंकि इस बिन्दु पर MC वक्र AR को नीचे की ओर से काटती है। फर्म OX उत्पादन कर उसे OP(=AR) कीमत पर बेचती है।

एकाधिकारी का संतुलन गिरती सीमांत लागत पर भी संभव हो सकता है बस यहाँ भी सीमांत लागत का सीमांत आगम को नीचे से काटना ही अनिवार्य होता है। यह सुनिश्चित करने का एकमात्र तरीका यही है कि सीमांत लागत के गिरावट की दर सीमांत आगम की गिरावट दर से कम हो। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि एकाधिकारी का संतुलन वृद्धिमान, स्थिर एवं ह्रासमान तीनों ही प्रकार की सीमांत लागत दशाओं में संभव है। केवल एक अवस्था ऐसी होती है जहाँ साम्य का निर्धारण नहीं हो पाता वह दशा है : जबकि सीमांत लागत में गिरावट की दर सीमांत आगम की गिरावट से अधिक तीव्र हो।

9.6.6 क्या एकाधिकार बाज़ार एक अकुशल बाज़ार है?

वास्तव में एकाधिकार बाज़ार व्यवस्था में अकुशलता ही पाई जाती है। सीमांत लागत से अधिक कीमत वसूल कर पाने की फर्म की एकाधिकारी शक्ति से उसे होने वाले लाभ इसी कारण उपभोक्ता को हुई बचत हानि, में कमी से कम रहता है। इस बचत की हानि तथा उत्पादक को मिले अतिरिक्त लाभ का अंतर को ही समाज पर एकाधिकार का निबल भार (Deadweight loss) का नाम दिया जाता है :

चित्र 9.6

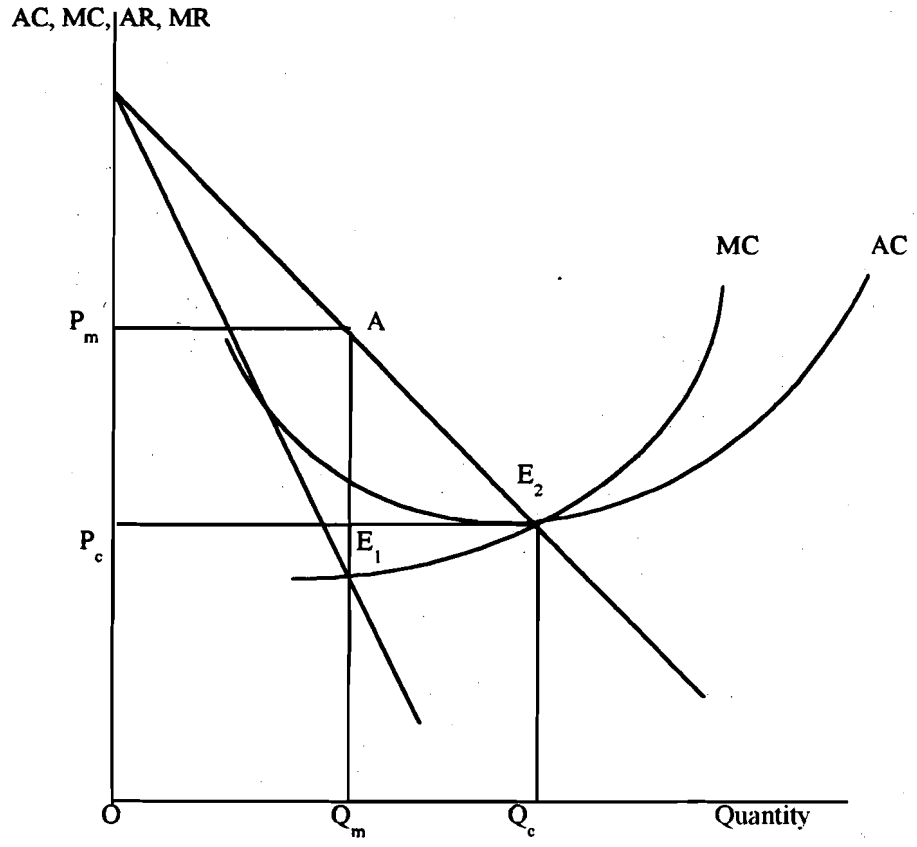

चित्र 9.6 को गौर से देखिए। एकाधिकारी कीमत P_m तथा पूर्ण प्रतियोगी कीमत Pc द्वारा दिखाई गई है (क्योंकि प्रतियोगिता में P=AR=MR=MC) एकाधिकारी द्वारा अधिक कीमत वसूली के कारण उपभोक्ता की बचत में कमी आती है। यह कमी आयत A तथा त्रिभुज B के योग के समान है। दूसरी ओर, उत्पादक को मिला अतिरिक्त लाभ तो आयत A तथा त्रिभुज C के अंतर के समान ही रह जाता है। अतः उत्पादक का अतिरिक्त लाभ उपभोक्ता की हानि से कहीं कम ही रहता है। यह कमी त्रिभुज B तथा C के योग के समान होती है। यही एकाधिकार के कारण समाज पर पड़ा निवल भार होता है।

9.7 एकाधिकार एवं कीमत विभेदन

कीमत विभेदन का अभिप्राय है समग्र वस्तु इकाइयों के लिए अलग-अलग कीमत वसूल पाना। सामान्यतः यदि कोई फर्म अपना उत्पादन एक ही समय में अलग-अलग कीमतों पर बेचती है तो हम कहते हैं कि फर्म कीमत विभेदन कर रही हैं। यदि फर्म द्वारा अलग-अलग कीमतों पर बेची जा रही इकाइयाँ समरूप नहीं हो तो फिर कीमत विभेदन का अर्थ होगा कि फर्म द्वारा उगाही गई कीमतों में अंतर उन इकाइयों की उत्पादन लागत के अंतरों के अनुरूप नहीं है। हम तीन प्रकार या कोटि के कीमत विभेदनों की चर्चा करेंगे। इनमें से तीसरा प्रकार सबसे अधिक चर्चित रहता है– इसमें लागतों

में अंतर नहीं होते हुए भी व्यापारी अलग-अलग बाज़ारों में अलग-अलग कीमतें वसूलकर पाता हैं। यह सब केवल एकाधिकार में ही संभव होता है।

9.7.1 कीमत विभेदन की कोटि या स्तर (Degree)

एकाधिकारी कहाँ तक अपने उत्पादन को अलग-अलग दामों पर बेच पाने में सफल हो सकता है वस्तुतः इसकी सीमाओं का निर्धारण कीमत विभेदन की कोटि या उसके स्तर द्वारा ही हो जाता है:

प्रथम कोटि का कीमत विभेदन

इस प्रकार के कीमत विभेदन में समरूप उत्पादन के लिए एकाधिकारी द्वारा उगाही जाने वाली कीमतों के अधिकतम स्तर का निर्धारण होता है। उत्पादक यह जानता है कि कोई उपभोक्ता वस्तु की किसी इकाई के लिए अधिकतम कितनी कीमत चुकाने को तैयार हो सकता है। वह प्रत्येक अतिरिक्त इकाई के लिए वही उच्चतम कीमत तय करता है जिस पर कोई उपभोक्ता उसे खरीदने को तैयार हो जाए। इस प्रकार एकाधिकारी प्रत्येक उपभोक्ता से उसकी समस्त बचत वसूल कर लेता है। फर्म अपने उत्पादन की माँग-वक्र पर ही कार्य करती है तथा माँग-वक्र के नीचे का समग्र क्षेत्रफल ही उसकी समग्र आगम के समान होता है। इस विशेष अवस्था में उसकी माँग-वक्र– अर्थात् औसत आगत-वक्र ही सीमांत आगम-वक्र भी बन जाती है। उत्पादन का स्तर वहाँ निर्धारित होता है जहाँ उसकी सीमांत लागत-वक्र माँग-वक्र को नीचे से काटती हैं।

द्वितीय कोटि का कीमत विभेदन

इस अवस्था में उत्पादक अपने उत्पादन की इकाइयों के समूहों का समूहवार (blockwise) विक्रय करता है। यह पहले समूह का किसी कीमत पर तो अगले समूह का विक्रय अलग-अलग कीमतों पर करता है। इस प्रकार यह उपभोक्ता की बचत का एक अच्छा खासा हिस्सा प्राप्त करने में सफल रहता है, पर प्रथम कोटि के कीमत विभेदन की भाँति सारी बचत नहीं प्राप्त कर पाता। सार्वजनिक सेवा उपक्रमों द्वारा सामान्यतः इसी प्रकार से अपनी आपूर्तियों की कीमतें निर्धारित होती है। उदाहरण के लिए विद्युत तथा जल बोर्ड आदि एक निश्चित स्तर तक उपभोग करने वालों से न्यूनतम दर–उससे आगे कुछ उच्च दर तथा उस दूसरे स्तर से भी ज्यादा उपभोग पर उच्चतम दर से कीमत वसूल करते हैं।

तृतीय कोटि का कीमत विभेदन

यहाँ तो एकाधिकारी अपने ग्राहकों के अलग-अलग समूहों से अलग-अलग कीमतें वसूलता है। यह प्रत्येक समूह को एक पृथक् बाज़ार मानकर व्यवहार करता है। यह सबसे अधिक प्रचलित प्रकार का कीमत विभेदन होता है हम इसकी अच्छे विस्तार से विवेचना कर रहे हैं।

9.7.2 कीमत विभेदन कब संभव होता है

आइए इन शर्तों पर विचार करें जिनके पूरा होने पर एकाधिकारी के लिए अलग-अलग कीमतों पर अपना समरूप उत्पादन बेच पाना संभव हो पाता है। तृतीय कोटि का कीमत विभेदन के लिए मूलभूत शर्त तो यही है कि एक उपभोक्ता किसी अन्य को एकाधिकारी से खरीदी गई सामग्री बेच नहीं पाए। इस विभेदन का आधार उपभोक्ताओं की अपनी विलक्षणताएँ, वस्तु की प्रकृति, स्थानों में फासले या फिर कर अथवा शुल्कों आदि द्वारा निर्मित बाधाएँ हो सकती हैं। संभव है कि बाज़ार के एक विभाग में खरीदारी करने वालों को किसी अन्य विभाग में दाम कम होने की जानकारी ही

नहीं हो। यह स्पष्टतः संपूर्ण बाज़ार में जानकारी के प्रवाह के अवरुद्ध होने का मामला होगा। कभी-कभी उपभोक्ताओं को यह भ्रम भी हो जाता है कि यदि कीमत ज्यादा है तो वस्तु की गुणवत्ता भी अधिक होगी। वस्तु की अपनी प्रकृति का भी महत्त्व रहता है। इस संदर्भ में प्रत्यक्ष सेवाओं के उदाहरणों पर गौर किया जा सकता है। किसी डाक्टर या फिर शिक्षक आदि की विशेष सेवाओं को इसी प्रकार के विभेदन का आधार माना जा सकता है। यहाँ कम कीमत पर ये सेवाएँ पाने वाले किसी अन्य व्यक्ति को, जिसे सामान्यतः अधिक कीमत देनी पड़ती हो, इनका पुनः विक्रय नहीं हो सकता। कई बार एकाधिकारी अपने बाज़ार के विभागों के बीच भौगोलिक या कृत्रिम सीमाओं अथवा बाधाओं का लाभ उठाकर भी अलग-अलग कीमतें वसूलने में सफल हो जाता है। अन्ततः कीमत विभेदन की सफलता इसी बात पर निर्भर रहती है कि कोई अन्य व्यक्ति एकाधिकारी का माल उसके ग्राहकों को उससे कम कीमत पर नहीं बेच पाए।

कीमत विभेदन कब लाभकारी होता है?

उपर्युक्त शर्तों के पूरा होने पर एकाधिकारी कीमत विभेदन कर सकता है। पर, क्या उसे इससे कुछ लाभ भी होगा? वास्तव में कीमत विभेदन से व्यापारी को फायदा तभी संभव है जबकि अलग-अलग बाज़ारों में माँग की लोच के मान में अंतर हों, अन्यथा नहीं। इस शर्त की कुद और व्याख्या करने की आवश्यकता है :

मान लो कि एक एकाधिकारी ने अपने बाज़ार को दो विभागों या उप बाज़ारों में बाँट रखा है। ये हैं बाज़ार A तथा बाज़ार B। उसके पास इनमें बेचने के लिए वस्तु की एक निश्चित मात्रा उपलब्ध है। अतः प्रश्न यह है उस मात्रा को इन दो बाज़ारों में किस प्रकार बाँटा जाए कि व्यापारी की कुल आगम अधिकतम हो सके? इसके लिए आवश्यक शर्त यही होगी कि उत्पादक दोनों बाज़ारों से समान सीमांत आगम पाने का प्रयास करें अर्थात् वह इस प्रकार वस्तु की बिक्री करें कि $MR_A=MR_B$।

अब यह बात सहज रूप से समझ आ सकती है कि यदि दोनों बाज़ारों में माँग की लोच एक समान हो तो फिर कीमत विभेदन का कोई लाभ नहीं होगा। अभीष्ट आबंटन के लिए $MR_A=MR_B$ की शर्त पूरी करना आवश्यक होता है। साथ ही सीमांत आगम एवं कीमतों के बीच संबंध की रचना में माँग की लोच का भी महत्त्व होता है : यथा $MR_A=P_A(1-1/e_A)$ तथा $MR_B=P_B(1-1/e_B)$ यदि $MR_A=MR_B$ तथा दोनों बाज़ारों में माँग की लोच भी समान हों, अर्थात् $e_A=e_B$ तो फिर वहाँ वसूली गई कीमतें, $P_A=P_B$ भी समान हो जाती हैं। दूसरे शब्दों में कीमत विभेदन तभी व्यावहारिक एवं प्रभावी हो पाएगा जब कि दोनों बाज़ारों की लोच में समानता नहीं हो।

दूसरी ओर, यदि $e_A<e_B$ तो बाज़ार A में कीमत वृद्धि से माँग में गिरावट कम ही रहती है और कीमत कम करने से बाज़ार B में माँग काफी बढ़ सकती है। इस प्रकार कुल आगम की वृद्धि लागतों की वृद्धि से अधिक होगी–अर्थात् फर्म को अधिक लाभ होगा। अतः एकाधिकारी बाज़ार A से वस्तु की कुछ मात्रा को बाज़ार B में भेज देगा। बाज़ार B में बिक्री में आई कमी बाज़ार B में हुई वृद्धि से कम ही रहेगी। बाज़ार A में कम आपूर्ति होने के कारण वहाँ कीमत में वृद्धि होगी। बाज़ार A में आपूर्ति की वृद्धि के कारण कीमत में कुछ मामूली कमी हो सकती है।

सीमांत अगम तथा कीमत स्तर का संबंध निरूपित करने वाला सूत्र, $MR=P(1-1/e)$ इस परिणाम को और स्पष्ट कर सकता है। हम जानते हैं कि $MR_A=MR_B$ अतः $P_A(1-1/e_A)$। अतः यदि e_A, e_B तो P_A का मान P_B से कम होना अनिवार्य होगा। अर्थात् एकाधिकारी कम लोचशील माँग वाले बाज़ार में अधिक एवं अधिक लोचशील माँग वाले बाज़ार में कम कीमत पर माल बेचकर अधिकतम

लाभ की अनिवार्य शर्त, $MR_A=MR_B$ की पूर्ति कर सकता है। इस शर्त के पूरा होने के लिए यह भी आवश्यक है कि :

क) दोनों बाज़ारों ed>1 हो तथा

ख) उसे दोनों ही बाज़ारों में माल बेचना लाभप्रद भी हो अर्थात् दोनों ही जगहों MR, MC से अधिक हो–आगत वृद्धि की दर लागत वृद्धि से अधिक हो।

9.7.3 कीमत विभेदन एवं संतुलन का निर्धारण

विभेदकारी एकाधिकारी फर्म के कुल लाभ को अधिकतम करने वाले उत्पादन स्तर का निर्धारण उसके समग्र सीमांत आगम एवं समग्र सीमांत लागत की समानता द्वारा ही होता है। इस विचार को हम चित्र 9.7 द्वारा समझा रहे हैं। फर्म की दोनों बाज़ारों, A, B में औसत आगत एवं सीमांत आगत-वक्र क्रमशः AR_A, AR_B तथा MR_A एवं MR_B हैं। कुल माँग-वक्र D वस्तुतः AR_A तथा AR_B का क्षैतिज योग ही है। इसी प्रकार फर्म की कुल सीमांत आगत दोनों बाज़ारों की सीमांत आगतों, MR_A तथा MR_B का योग होगी। फर्म की सीमांत लागत MC है।

चित्र 9.7

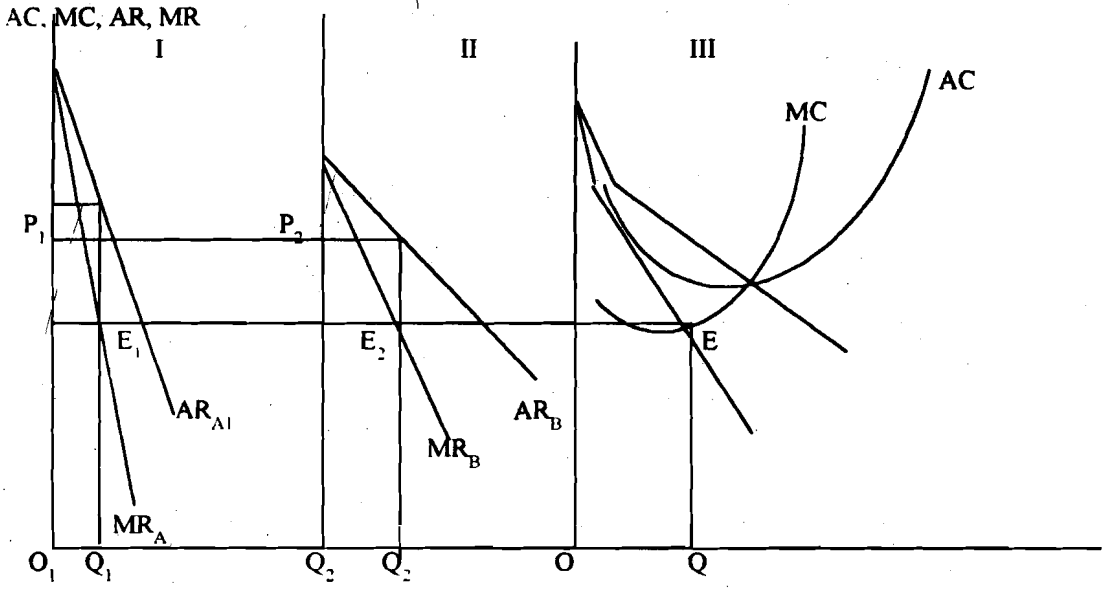

चित्र 9.7 के खंड I में हम बाज़ार A की माँग एवं सीमांत आगत-वक्र D_A तथा MR_A दिखा रहे हैं। खंड II में बाज़ार B की माँग एवं सीमांत आगत दिखाई गई हैं। खंड III में कुल माँग $D=D_A+D_B$ और उसे जुड़ा सीमांत आगत-वक्र AMR दिखाया गया हैं। फर्म की सीमांत आगत MC हैं। MC द्वारा AMR को E पर काटने से ही संतुलन उत्पादन स्तर OQ का निर्धारण होता है। अधिकतम लाभ कमाने के लिए फर्म दोनों बाज़ारों में सीमांत आगत को इस संतुलन MC-MR के समान करेगी। अतः बाज़ार A में $MR_A=MC$ द्वारा OQ_A मात्रा बेचने का निर्णय लिया जाता है। इसके अनुरूप कीमत OP_B होगी। इसी प्रकार बाज़ार B में OQ_B मात्रा को OP_B कीमत पर बेचा जाएगा। ध्यान दें $OQA<OQ_B$ और $OPA>OP_B$। अर्थात् कम लोचशील माँग-वक्र के बाज़ार में कम मात्रा ऊँचे दामों बेची जाती है तथा अधिक लोचशील माँग वाले बाज़ार में अपेक्षाकृत अधिक मात्रा कम कीमत पर बेची जाती है।

लाभ का स्तर अधिकतम करने के लिए फर्म को दो प्रकार के फैसले करने होंगे :

क) कुल कितना उत्पादन करें? तथा

ख) किस बाज़ार में कितना माल किस दाम पर बेचें?

फर्म के समग्र उत्पादन का निर्धारण तो MC=AMR द्वारा हो जाता है । किन्तु दोनों बाज़ारों में माँग की लोचशीलता में अंतर हैं ।इसलिए लाभ अधिकतम करने की शर्त होगी $MR_A=MR_B=AMR=MC$ । उत्पादक अधिक लोचशील माँग वाले बाज़ार के ग्राहकों से ज्यादा ऊँची कीमत वसूल करने में सफल हो जाएगा ।

बोध प्रश्न 2

1) कीमत विभेदन क्या होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) कीमत विभेदन के लिए आवश्यक शर्तें बताइए ।

.....

.....

.....

.....

.....

3) एक अधिकतम लाभ को उत्सुक एकाधिकारी दो बाज़ारों को अपने उत्पादन का आबंटन किस प्रकार करना है? वह अलग-अलग कीमत वसूल करने में किस प्रकार सफल रहता है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) कीमत विभेदन एवं माँग की लोच का संबंध समझाइए ।

.....

.....

.....

.....

.....

9.8 सार्वजनिक एकाधिकार : संतुलन कीमत एवं उत्पादन

अभी तक हम ऐसे निजी क्षेत्र के एकाधिकारी के विषय में चर्चा कर रहे थे जो अपने आर्थिक एवं तकनीकी अवरोधों को ध्यान में रखते हुए अधिकतम लाभ कमाने के उद्देश्य से कार्य कर रहा था। इस भाग में हम किसी सार्वजनिक एकाधिकारी फर्म के व्यवहार का अध्ययन करेंगे जिसकी रचना सार्वजनिक हितों की रक्षा के लिए सरकार द्वारा की गई हो। इस फर्म का उद्देश्य कम कीमत पर अधिक उत्पादन उपलब्ध कराकर जनसामान्य के कल्याण का सवंर्धन होता है। इसका लक्ष्य अधिक आगम या लाभ का उपार्जन नहीं होता। स्वाभाविक ही है कि ऐसी फर्म के उपयुक्त कीमत एवं उत्पादन स्तरों का आकलन अधिकतम लाभ के लिए उपयुक्त नियमों के निर्देशानुसार नहीं हो जाता। यहाँ तो अधिकतम कल्याण का विचार ही उपयोगी सिद्ध होता हैं।

सार्वजनिक एकाधिकारी उपक्रम के लिए कीमत निर्धारण की दो वैकल्पिक नीतियाँ हो सकती हैं। इन्हें हम औसत लागत आधारित कीमत निर्धारण तथा सीमांत लागत आधारित निर्धारण कहते हैं। वस्तुतः सरकार इन्हीं दो विधियों द्वारा निजी एकाधिकारी की कीमतों पर अंकुश रखने के लिए भी उपयुक्त दिशा-निर्देश प्राप्त कर सकती है यह सामान्य कराधान की नीतियों से भिन्न है।

एकाधिकारी अपना उत्पादन सीमित कर कीमतों को बढ़ा पाने में समर्थ रहता है। इसी कारण उनके व्यवहार का नियमन आवश्यक हो जाता है। यदि उनके व्यवहार पर अंकुश नहीं लगाए जाते तो वे अतिलाभ कमाते हैं, इससे आय की विषमताओं में वृद्धि होती है, उपभोक्ताओं का शोषण होता है तथा संसाधनों के आबंटन में विकृतियाँ घर कर जाती है। इन सभी से उपभोक्ताओं के कल्याण स्तर पर दुष्प्रभाव पड़ता है। अतः एकाधिकार नियमन का मुख्य उद्देश्य तो उपभोक्ताओं के कल्याण स्तर बढ़ाना ही होता है या फिर एकाधिकारी द्वारा वसूल की जा रही कीमतों के अधिकतम स्तर का निर्धारण किया जा सकता है। इस इकाई में हम कीमत निर्धारण द्वारा एकाधिकार के नियमन पर चर्चा करेंगे। औसत एवं सीमांत लागतों पर आधारित कीमत निर्धारण से जुड़े मुद्दों पर हम सार्वजनिक उपक्रम कीमत नीतियों एवं निजी एकाधिकार के नियमन, दोनों ही संदर्भों में चर्चा कर रहे हैं।

9.8.1 सीमांत लागत के अनुसार कीमत निर्धारण

हमने देखा है कि सामान्यतः एकाधिकारी सीमांत लागत से अधिक, कीमत निश्चित करता है **P, P=MC** चित्र 9.6 की एक बार फिर याद करें। एकाधिकारी OQ_M उत्पादन OP_M कीमत पर बेचता है। यहाँ सरकार अधिकतम कीमत का निर्धारण उसकी सीमांत लागत के समान कर सकती है। फिर तो उत्पादन का स्तर बढ़कर OQ_C तक पहुँच जाएगा और कीमत कम होकर OP_C ही रह जाएगी। यही कीमत संसाधनों के आबंटन में कुशलता भी आती है क्योंकि यह उत्पादन की सीमांत लागत के समान होती है। इससे उपभोक्ताओं का कल्याण स्तर भी संबंधित होता है। अनियंत्रित एकाधिकार की अवस्था में उपभोक्ता की बचत त्रिभुज AP_ME_1 के समान होता पर नियमन के बाद इसका स्तर AP_CE_2 हो जाता है।

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि सीमांत लागत के आधार पर निर्धारित कीमत में भी एकाधिकारी असामान्य लाभ कमाते रह सकता है। अभी भी उसकी औसत आगम औसत लागत से अधिक ही रहती है। ऐसी अवस्था को हम उत्पादन क्षमता बाधित **(capacity constrained)** अवस्था का नाम देते हैं अर्थात् यहाँ वस्तु की माँग फर्म की उत्पादन क्षमता से बहुत अधिक होती है। दूसरी ओर यदि फर्म की उत्पादन क्षमता माँग से अधिक हो तो फिर फर्म को प्रत्यक्षतः हानि भी उठानी पड़ सकती

है। उस दशा में उसकी औसत लागत सीमांत लागत से अधिक ही रहती है। फिर भी फर्म उसी स्थिति में सीमांत लागत आधारित कीमत पर उत्पादन कर पाएगी जबकि उसे सरकार से सहायता प्राप्त हो रही हो (आपको ध्यान होगा कि उत्पादन क्षमता से हमारा तात्पर्य उत्पादन के उस स्तर से होता है जहाँ फर्म की औसत लागत न्यूनतम होती है। अतः हानि वाली अवस्था वही होगी जहाँ माँग-वक्र फर्म की औसत वक्र से नीचे आ जाए या उसे स्पर्श करें)।

9.8.2 औसत लागत के अनुसार कीमत निर्धारण

सार्वजनिक नीति का उद्देश्य एकाधिकार का नियमन या फिर न्यूनतम संभव कीमत पर अधिकतम उत्पादन उपलब्ध कराना हो सकता है। यहाँ दूसरी विधि, अर्थात् औसत लागत के आधार पर कीमत निर्धारण का अनुसरण भी हो सकता है (यदि कीमत इस प्रकार तय की जाए कि AR=AC तो फर्म केवल सामान्य लाभ कमा पाएगी। क्षमता बाधित अवस्था में भी औसत लागत आधारित कीमत सीमांत लागत आधारित कीमत से कम होगी। इस प्रकार उपभोक्ता की बचत और अधिक हो पाएगा। किन्तु उत्पादन क्षमता की अधिकता की दशा में P=AC का अनुपालन करने पर कीमत का स्तर ऊँचा हो जाएगा, फर्म को कोई प्रत्यक्ष हानि नहीं होगी। सीमांत लागत के आधार पर कीमत निर्धारण द्वारा ही पूर्ण आर्थिक कुशलता और अधिकतम सामाजिक कल्याण प्राप्त होता है लेकिन अप्रयुक्त क्षमता **(excess capacity)** और प्राकृतिक एकाधिकार (इस प्रकार की बाज़ार व्यवस्थाओं में कीमत निर्धारण विस्तृत आप प्रबंधकीय अर्थशास्त्र विषय के अंतर्गत करेंगे।) की दशा में तो AC>AC होने के कारण सीमांत लागत कीमत निर्धारण में फर्म को व्यवसाय में बनाए रखने के लिए सरकारी आर्थिक सहायता **(subsidies)** की व्यवस्था अनविार्य हो जाती हैं।

9.8.3 औसत लागत से अधिक निर्धारण (Mark Up Pricing)

कई बार ऐसा समझा जाता है कि वास्तविक व्यवहार में उत्पादक सीमांत आगम एवं लागत विश्लेषण द्वारा कीमत निर्धारण नहीं करते। वे एक वैकल्पिक विधि का प्रयोग करते हैं जिसमें औसत लागत–जमा **(average cost plus)** सिद्धांत अपनाया जाता है।

दूसरे शब्दों में फर्म इस प्रकार कीमत का निर्धारण करती है कि उसकी सारी औसत लागतें पूरी हो सकें और उसे अतिरिक्त लाभ भी मिलें। अर्थात् P=AVC+GPM यहाँ P कीमत, AVC औसत परिवर्ती लागत तथा GPM सकल लाभ मार्जिन के समान होता है। GPM में औसत स्थिर लागत एवं कुछ अतिरिक्त लाभ मार्जिन सम्मिलित होते हैं।

हमारी इस टिप्पणी का उद्देश्य यही दर्शाना है कि दीर्घकाल में तो औसत लागत तथा सीमांत लागत दोनों विधियों से हमें वही अधिकतम लाभ उपार्जन वाली अवस्था ही प्राप्त हो जाती है। औसत लागत के आधार पर कीमत निर्धारण में दीर्घकालिक संतुलन में माँग की लोच का आकलन निहित रहता है। अधिकतम लाभ की शर्त है MC=MR। हम पहले ही देख चुके हैं कि MR=P(1-1/e)। अतः यदि MC>0 तो अधिकतम लाभ के लिए MR भी धनात्मक होगा। दूसरे शब्दों में e>1, यदि उपयुक्त उत्पादन स्तर पर AVC स्थिर हो–अर्थात् AVC=MC। संतुलन के लिए आवश्यक होगा कि AVC=MR।

अतः AVC=P (1-1/e)=P{e-1/e)।

दूसरे शब्दों में P=AVC{e/e-1}। यदि e>1 तो हम e/e-1 को 1+k मान सकते हैं जहाँ k>0। अतः कीमत P=AVC{e/(e-1)}। यह kAVC की कुल लाभ मार्जिन है। यदि फर्म AVC का 20 प्रतिशत लाभ मार्जिन तय करती है तो AVC। अतः e/e-1=1.20। इस दशा में e का मान

6 होगा। इस प्रकार कुल लाभ मार्जिन का निर्धारण माँग की कीमत लोचशीलता के आकलन के समान बन जाता है। यह सीमांत विश्लेषण के परोक्ष प्रयोग के समान भी है। अतः हम कह सकते हैं कि जब कोई व्यवसायी औसत लागत में कुछ जोड़कर कीमत निर्धारण करता है तो वह वास्तव में अपने उत्पादन की माँग की कीमत लोच का आकलन ही कर रहा होता है।

बोध प्रश्न 3

1) सार्वजनिक एकाधिकारी फर्म निजी एकाधिकारी से किस प्रकार भिन्न होती है? सार्वजनिक एकाधिकारी अपने उत्पादन एवं कीमत निर्धारण किस प्रकार करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) औसत आगत से अधिक अनुपात द्वारा कीमत निर्धारण पर एक टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

9.9 सारांश

हमने इस इकाई का आरंभ बाज़ार के एकाधिकार को जन्म देने वाले कारकों की व्याख्या से किया था। कहीं-कहीं टेक्नोलॉज़ी का विकास भी एकाधिकार का जनक हो सकता है, पर सामान्यतः तो वह किसी न किसी कानूनी प्रावधान जैसे (पैटेण्ट) का परिणाम ही होता है अथवा कानून द्वारा प्रत्यक्षतः किसी सेवा की आपूर्ति के लिए एकाधिकारी उपक्रम भी हो सकता है। फिर हमने एकाधिकारी की माँग एवं सीमांत आगम-वक्रों के स्वरूप की विवेचना की और इसके संतुलन की व्याख्या की है। इसके बाद चर्चा हुई एकाधिकार से जुड़े मुद्दों की। क्या एकाधिकारी सदा लाभ ही कमाता है, अथवा क्या कीमत वृद्धि सदैव लाभप्रद रहती है? उसकी आपूर्ति-वक्र का निरूपण एवं उत्पादन में दक्षता आदि अन्य बातों पर भी ध्यान दिया गया है।

एकाधिकारी के व्यवहार का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहलु है कीमत विभेदन। इस प्रकार हमने बड़े विस्तार से 9.7 में चर्चा की है। फिर हमने एक सार्वजनिक एकाधिकार में कीमत निर्धारण की दो वैकल्पिक नीतियों पर बातचीत करते हुए यह भी स्पष्ट किया है कि इन्हीं तर्कों के आधार पर निजी एकाधिकार पर कीमत नियंत्रण लागू करने के निर्णय भी लिए जा सकते हैं। इकाई के अन्त में हमने लागत के अधिक अनुपात के रूप में कीमत निर्धारण की व्याख्या करते हुए उसे वस्तु की माँग की लोच के आकलन के समतुल्य ठहराया है।

9.10 शब्दावली

एकाधिकार : बाज़ार में किसी वस्तु के एक ही उत्पादक/विक्रेता का होना।

प्राकृतिक एकाधिकार : किसी प्राकृतिक संसाधन पर स्वामित्व से जन्मा एकाधिकार।

कानूनी एकाधिकार : पैटेण्ट आदि की कानूनी व्यवस्था पर आधारित एकाधिकार।

टैक्नोलॉज़िकल एकाधिकार : टैक्नोलॉज़ी का ऐसा स्वरूप जिससे बहुत विशाल पैमाने पर उत्पादन ही एकमात्र विकल्प होता है। इस प्रकार बाज़ार में एक से अधिक उत्पादकों की आवश्यकता ही नहीं रहती।

कीमत विभेदन : अलग-अलग उपभोक्ताओं/बाज़ारों में अलग-अलग कीमत वसूल कर पाने की एकाधिकारी की क्षमता।

सार्वजनिक एकाधिकार : किसी वस्तु या सेवा को अधिक मात्रा में उचित दामों पर उपलब्ध करने के उद्देश्य से सरकार द्वारा स्थापित एकाधिकार।

सीमांत लागत के अनुसार कीमत निर्धारण: वह कीमत निर्धारण नीति जहाँ वस्तु की सीमांत लागत उगाहने का प्रयास होता है।

औसत लागत के अनुसार कीमत निर्धारण: इस कीमत निर्धारण नीति में औसत लागत की उगाही क्रेताओं से की जाती है।

औसत लागत से अधिक कीमत निर्धारक: इस नीति में औसत परिवर्ती लागत के अनुपात का ही उसमें जोड़कर कीमत निर्धारित होती है। इसमें फर्म की स्थिर लागतों की उगाही के साथ उसके लिए कुछ लाभ की व्यवस्था भी हो जाती है।

9.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Nicholson, W. (1995) : *Intermediate Microeconomics and its Applications*, Dryden Press, Harcourt Brace, New York.

Pindyck, R.S. and Rubinfold (D.L. (1995): *Microeconomics*, Prentice Hall of India, New Delhi.

Varian, Hal (1995) : *Intermediate Microeconomics*, W.W. Norten and Co., New Yourk.

9.12 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा दिशा-संकेत

बोध प्रश्न 1

1) अपने उत्तर के लिए भाग 9.1, 9.2 पढ़ें।

2) अपने उत्तर के लिए भाग 9.1, 9.2 पढ़ें।

3) अपने उत्तर के लिए भाग 9.3 पढ़ें।

4) अपने उत्तर के लिए भाग 9.3 पढ़ें।

5) अपने उत्तर के लिए भाग 9.3 पढ़ें।

6) अपने उत्तर के लिए भाग 9.4 पढ़ें।

7) अपने उत्तर के लिए भाग 9.3, 9.4 पढ़ें।

8) अपने उत्तर के लिए भाग 9.5 पढ़ें।

बोध प्रश्न 2

1) अपने उत्तर के लिए भाग 9.7 पढ़ें।

2) अपने उत्तर के लिए पभाग 9.7.2 पढ़ें।

3) अपने उत्तर के लिए पभाग 9.7.2 पढ़ें।

बोध प्रश्न 3

1) अपने उत्तर के लिए उपभाग 9.8.1, 9.8.2 पढ़ें।

2) अपने उत्तर के लिए उपभाग 9.8.3 पढ़ें।